

आत्म हत्या पर नाटक
मैं शर्मिन्दा हूँ

श्रीमति रिकी गर्ग
द्वारका , नई दिल्ली

पात्र

- (1) शहीद सिंह — एक शहीद सिपाही
- (2) भँवरसिंह एवं अन्य 2—3 शहीद
- (3) कमांडिंग आफिसर
- (4) कायर सिंह — आत्म हत्या करने वाला सिपाही
- (5) यमराज — मृत्यु के देवता
- (6) यमराज के मंत्री
- (7) यमराज के दरबारी
- (8) यमराज के दरबान
- (9) शहीद सिंह और कायर सिंह के अन्य सिपाही साथी
- (10) शहीद सिंह की पत्नी और बच्चे
- (11) शहीद सिंह के परिवार वाले
- (12) कायर सिंह की पत्नी और बच्चे
- (13) कायर सिंह के अन्य परिवार वाले
- (14) शहीद सिंह के जिले के कलेक्टर
- (15) शहीद सिंह के जिले के एस.पी. एवं अन्य पुलिस कर्मी

दृष्य —एक

स्टेज पर गमगीन सा माहौल है। धीमी लाइट धीरे-धीरे तेज होती हुई। शोक संकेत के तौर पर बैकग्राउन्ड में संगीत। कई सिपाही एवं ओहदेदार उदास खड़े हैं। स्टेज पर शहीद सिंह का शव तिरंगे में लिपटा रखा है और अन्य लोग इक्ठ्ठे हो रहे हैं।

एक सीनियर अफसर आता है और शव पर रीथ चढ़ाकर सैल्यूट करता है बिगुलर बिगुल बजाकर शहीद सिंह को सलामी देता है। अन्य अफसर और जवान उसे सैल्यूट करता है। रीथ, हार फूलों से काफ़िन को सजाया जाता है, कमांडिंग आफीसर कहता है। हमें बड़ा भारी नुकसान हुआ है हमारा एक साथी दुष्मन से लौहा लेते-लेते शहीद हो गया। पर यूँ मुँह लटकाने से काम नहीं चलेगा। हमें इस नुकसान का बदला आतंकवादियों से लेना है। हमें शहीद सिंह पर गर्व है। उसकी शहादत याद रखी जायेगी और हमारी आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी। क्यों साहब हम इस नुकसान का बदला लेंगे न?

सुबेदार मेजर— हाँ साहब एक की जगह एक दर्जन कारेंगे हमारे बहादुर जवान।

(सारे जवाने जोर से कहते हैं हाँ साहब हम उन्हें छोड़ेंगे नहीं)

कमांडिंग आफीसर – साहब मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी। अब हमें पूरे राजकीय सम्मान से अपने साथी को विदा करें।

सूबेदार मेजर— जी सर। सारी इन्तजाम कर लिया है।

कमांडिंग आफीसर— और हाँ अब शहीद सिंह का परिवार हमारी जिम्मेदारी है। उन्हें पूरा पैसा , पेंशन, बीमा आदि की राशी तुरन्त मिलें और उनसे हमेंषा सम्पर्क रखा जाए कि कोई जरूरत तो नहीं है। या फिर उन्हें कोई तकलीफ तो नहीं ।

सूबेदार मेजर— जी सर। आप फिकर मत करें। हम शिकायत का कोई मौका नहीं देंगे।

शव को उठाकर उसके निवास स्थान अर्थात उसके परिवार वालों को सुपुर्द हेतु भेजने के लिए प्रक्रिया की जा रही है। वहाँ पर स्थित जवानों की आँखों में आँसू है , अफसरों की आँखें भी श्रद्धापूर्ण नम है। कुछ जवान शहीदसिंह की बहादुरी के बारे में बातें कर रहे हैं। शहीद सिंह की अर्थी उठाते ही जोर-जोर से नारे लगते हैं। शहीद सिंह अमर रहे। भारत माता की जय। शहीद सिंह अमर रहे.....

दृष्य दो

एक चारपाई पर तीन चार जवान बैठे हैं। अचानक कायर सिंह गोलिया चलाने लगता है। सब तरफ भगदड़ मच जाती है। कुछ सिंघाही घायल है। फिर कायर सिंह अपने सर में दो गोली मार लेता है। कायर सिंह का शव पड़ा है। पुलिस आकर फोटो खींच रही है। पूछताछ कर रही है। घायलो को अस्पताल रवाना कर दिया जाता है। कायर सिंह के शव के पास लोग एक-दूसरे कानों में फुसफुसा रहे हैं। उसके परिवार के बारे में बातें कर रहे हैं। एक साथी जोकि उसके नजदीकी गाँव का रहने वाला है ने बताया कि कार्मिक की शादी हुए अभी दो साल ही हुए थे एवं घर में उसके वृद्ध माता-पिता, पत्नी एवं एक छोटा बच्चा है जोकि 8 महीने का है। (गमगीन माहौल है-षोक-संगत बज रहा है)

एक सिपाही— अरे यार दोस्त जरूर था पर कायर था।

दूसरा सिपाही— हाँ यार खुद तो मर गया पीछे बीबी बच्चो को मरने के लिए छोड़ गया।

तीसरा सिपाही— अरे यार देखो रामसिंह और सरदारा को भी गोली मार दी। अपनी तकलीफ़ से उन्हें क्यों मुसीबत में डाल दिया। भगवान न करे

एक सिपाही— मुझे तो लगता है कि परिवार की तरफ से वह काफी परेशानी में था जिसकी वजह से उसने आत्महत्या जैसा कदम उठाया।

सुना है रात को लम्बी –लम्बी बातें होती थी बीबी से। फिर अन्य परिवार वाले भी उससे ऐसे ही क्षति करते थे

दूसरा सिपाही— अरे यार परेषानी तो सभी को है। आपको भी परेषानी है मुझे भी परेषानी है। इस फोर्स में जितने भी कार्मिक है सभी को कुछ न कुछ घरेलू समस्या है। लेकिन इसका मतलब ये तो नहीं कि हम सब आत्महत्या जैसा घिनोना हरकत करें और छोड़ दे पूरे परिवार को जिन्दगीभर रोने के लिए। यह बहादुरी नहीं, बहादुरी तो है उस परिस्थिति का सामना करने की तथा दृढ़ निष्चय के साथ परिस्थिति को परास्थ करने की।

तीसरा सिपाही— हाँ यार देखो शहीद सिंह कितनी इज्जत की मौत मरा। हमारा सर उँचा हो गया। और इस कायर सिंह ने पूरी फौज की बदनामी कर दी।

पहला सिपाही— यदि हम अपने घर की छोटी सी समस्या का सामना करने में असमर्थ है तो हम देश की रक्षा क्या करेंगे? जबकि हमें 9 महीने के प्रशिक्षण के बाद शारीरिक एवं मानसिक रूप से इतने कठोर बनाया गया है ताकि हम किसी भी परिस्थिति का बिना हिचकिचाये उसका सामना कर सके। यदि मरना ही था तो दो—चार आतंकवादियों को मार कर मरता।

एक सिपाही— शायद आप ठीक ही कह रहे हैं। हमें आत्महत्या नहीं करना चाहिए। बल्कि उसका सामना करना चाहिए।

कमांडिंग आफीसर का आवागमन— सुबेदार मेजर साथ है और अन्य सिपाही भी है।

कमांडिंग आफीसर— (एक छोटा सा हार डाल कर) साथियों आज हमारा सर शर्म से नीचा कर दिया है। शहीद सिंह की शहादत पर इसने धब्बा लगा दिया। सब जगह थू-थू हो रही है। आज तक हमारी यूनिट में ऐसा नहीं हुआ। हम सभी को आज से शपथ लेनी चाहिए कि हम कभी भी आत्महत्या जैसे घृणित कार्य नहीं करेंगे। और यदि किसी भी साथी को कोई घरेलू या फोर्स संबंधी कोई परेशानी है तो उसके निदान हेतु अपने वरिष्ठ अधिकारी को बताया जायेगा ताकि उसकी समस्या का समाधान हो सके। सुबेदार मेजतर साहब मै। सभी से कल बातचीत करूँगा और ऐसी वारदात दुबारा न हो उस पर सबकी सलाह लेंगे।

सुबेदार मेजर—जी सर।

दृष्य –तीन

परिवारो का दृष्य

जिस समय शहीद सिंह के शव को उसके पैतृक गाँव में ले जाया गया तो वहाँ की स्थानीय पुलिस , स्थानीय मिनिस्टर एवं हजारों की संख्या में लोग शहीद सिंह की अन्तिम यात्रा में शामिल होने एवं अन्तिम दर्शन के लिए व्याकुल हो रहे थे। सिपाही शहीद सिंह के माता-पिता एवं पत्नी को बहुत बड़ा सदमा हुआ । पत्नी बार-बार बेहोश होती जा रही थी। सीमा सुरक्षा बल के जवान जोकि शहीद सिंह को उसके गाँव में लाये थे उन्होंने शहीद को सलामी दी। कई आला अफसर मौजूद थे।

कलेक्टर— मित्रो हमें बड़ा अफसोस है कि शहीद सिंह अपना भरा पूरा परिवार छोड़कर चले गए।

(बीच में जोर-जोर से आवाज गूँज उठती है, शहीद सिंह जिन्दाबाद.....

।

कलेक्टर— हमें उसकी शहादत पर गर्व है कि हमारे क्षेत्र का एक जवान जोकि देश की सुरक्षा करते हुए दुश्मनों से लोहा लेते-लेते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। ऐसे बहादुर जवान बहुत कम पैदा होते हैं। गर्व है उस जननी पर जिसने ऐसे बहादुर को पैदा किया। इस अवसर पर मैं शहीदसिंह के गाँव

में एक शहीद गेट बनाने का आदेश देता हूँ ताकि आने वाली पीढ़ी इस बहादुर को हमेशा याद रख सके।

एस.पी.साहब— मित्रो मैं कलेक्टर साहब की बातों से गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। आम तौर पर खाकी वर्दी पर तो लाछन ही लते हैं पर शहीद सिंह ने हम वर्दी वालों का सर फक्र से उँचा कर दिया (शहीद सिंह जिन्दाबाद। भारत माता की जय के रे।

कलेक्टर शहीद सिंह की माँ—बाप से बातें रतें हैं। बाबा हम आपका दुख समझ सकते हैं पर ऐसे ही बहादुरों से यह देश है वरना दुश्मनों ने तो इसे बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

शहीद सिंह के पिता— सर हमारा बेटा तो हमारे गाँव के ही नहीं पूरे देश में हमें इज्जत दे गया। मैं तो सोचता हूँ मेरा एक ही बेटा फौज में क्यों है। सर मैं अपने पोतों को भी देश सेवा के लिए दूँगा।

कलेक्टर— बाबा हमें आप जैसे माँ—बाप पर ज्यादा फक्र होता है जो ऐसे ख्याल रखते हैं और अपने बच्चों को खुशी—खुशी देश के लिए समर्पित करते हैं।
(कलेक्टर शहीद सिंह की पत्नी से)

बहन शहीद सिंह की कमी पूरी नहीं हो सकती। आप पर जो पहाड़ टूटा है..... (भावुक हो जाते हैं) बहन आप बच्चे का ख्याल रखें और हमसब आपकी तकलीफों से हमेशा साथ खड़े रहेंगे।

दृष्य –चार

जिस समय कायर सिंह के शव को उसके पैतृक गाँव में ले जाया गया तो बहुत कम गाँव के लोग कायर सिंह की अन्तिम विदायी में शामिल हुए। कायर सिंह का माता-पिता एवं पत्नी इतने दुखी है मानो उनके उपर पहाड़ टूट गया हो, कायर सिंह माता-पिता के लिए इकलौता बेटा था जो उनके बुढ़ापे का सहारा था वो भी इस दुनिया से चला गया। अब उनके जीने का कोई मतलब ही नहीं है। पत्नी जोकि अभी हाल ही में शादी हुई थी उसकी पूरी जिन्दगी बाकी है। इस निरंकुष समाज में वह किस प्रकार अपनी बाकी जिंदगी बसर करेगी। कायर सिंह के इस कदम ने पूरे परिवार को भयंकर दुखों का सामना करने के लिए छोड़ दिया है। परिवार के कई लोग उसकी पत्नी को ताने दे रहे हैं कि –

एक गाँव का आदमी— “ यह औरत ठीक नहीं है। जब से इससे शादी हुआ है कायर सिंह काफी परेशान रहता था। इसकी वजह से ही कायर सिंह ने आत्महत्या की है।

दूसरी महिला— “ यह कुलछनी है। इसे तो घर से निकाल देना चाहिए। इसी की वजह से यह सब हुआ ”

अन्य लोग— कायर सिंह तो बहुत ही सज्जन किस्म का इन्सान था तो फिर उसने ऐसा क्यों किया।

अन्य लोग— कायर सिंह मेरा दोस्त था। पिछली बार जब वह छुट्टी आया तो उसने मुझे बताया कि वह अपनी पत्नी की वजह से काफी परेशान है। उसने बताया कि उसकी पत्नी उसके माँ-बाप से काफी झगड़ा करती है।

अन्य लोग— इसका मतलब कायरसिंह की मृत्यु का कारण उसकी पत्नी ही है।

अन्य लोग— अगर वह पत्नी की वजह से तनाव में था तो इसका मतलब ये तो नहीं कि वह आत्महत्या कर ले। बीबी ने तो उसे आत्महत्या करने के लिए नहीं कहा। तो आप सारा आरोप पत्नी पर ही क्यों लगा रहे हो। वह तो एक फोर्स का नागरिक था जहाँ पर जवान को इतना मजबूत बनाया जाता है कि वह हर परिस्थिति का बड़े ही साहसपूर्ण तरीके से सामना करने का साहस रखते हैं तो फिर उसने ऐसा क्यों किया। ये सब कायरसिंह का दोष है जोकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

कायर सिंह की पत्नी— मैं कैसे जिन्दा रहूँगी। इन्होंने यह करके हमारा सर झुका दिया। मैं पहले गाँव में सबसे इज्जत पाती थी। सब मुझे प्यार करते थे। कोई मुसीबत आने पर सारे चले आते थे। अब सारे मुझे दोष दे रहे हैं।

(दो बच्चे रोते हुए आते हैं। मम्मी, पापा को क्या हुआ)

कुछ परिवार वाले— चलो यार जल्दी अंतिम संस्कार करो नहीं तो बच्चे परेशान होते रहेंगे।

दृष्य –पाँच

यमराज का दरबार— सजाधजा दरबार है। सभी खड़े हैं। दरबान दरवाजे पर खड़ा है। यमराज आने का उद्घोषण । सभी प्रणाम करते हैं।

यमराज — चित्रगुप्त, भारत में काफी आतंकवाद फैला है। सीमा पर भी बहुत लोग शहीद हो रहे हैं।

चित्रगुप्त — जी महाराज

यमराज — मैं भारत की सीमा पर शहीद हुए लोगों से मिलना चाहता हूँ

चित्रगुप्त — जी महाराज उनकी संख्या तो बहुत है। भारत में शहीदों की भरमार है।

यमराज — हमें उसका गर्व है। आप पिछले 10–12 दिनों में शहीद हुए लोगों को लेकर आये

सभी सीमा पर मरे हुए लोग यमराज के दरबार में उपस्थित किये जाते हैं। शहीद सिंह और कायर सिंह भी आ जाते हैं।

यमराज— हमें आप सब शहीदों पर गर्व है। आपने अधर्मी लोगों से लोहा लिया और देश धर्म का पालन किया। अब आप एक–एक करके अपनी बहादुरी के

कारनामों का गुनगान करें। हमें भारत माँ के सपूतो के बारे में जानकर प्रसन्नता होगी।

शहीद सिंह— महाराज में छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सलवादी इलाके में तैनात था।

जिस समय रात के समय हमारी कम्पनी नक्सलवादी इलाके के एक गाँव में उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ हो रही थी तो मेरे दो साथी मारे गए और एक घायल हो गया। एक गोली मुझे भी लगी पर मैंने उसकी परवाह किए बिना दुश्मन पर गोली चलाता रहा और तीन-चार को वहीं ढेर कर दिया। फिर मैं अपने घायल साथी को सुरक्षित स्थान पर ले जा रहा था तभी एक झाड़ी में छिपे माओवादी ने मुझ पर हमला किया। गुथम-गुथ्या की लड़ाई हुई और मैंने उसे भी मार दिया। पर इसी बीच मुझे भी और कई गोलियां लग गईं मैं अपने साथी को तो बचा पाया पर घाव से खून ज्यादा बह जाने से मैं मारा गया।

दूसरा शहीद — महाराज मैं कश्मीर राज्य के पुलवामा जिले में तैनात था। जिस

समय हमारी गाड़ी बटालियन मुख्यालय पंथाचौक से असला ला रही थी मैं, गाड़ी पर बतौर गार्ड था। रास्ता दुर्गम था। अचानक सामने पहाड़ी से फायर आया। याने की हम पर अम्बुष हो चुका था। आतंकवादियों की तादात बहुत थी पर हम तीन लोगो ने सिखलाई के

मुताबिक उन पर धावा बोलकर करीब— 5—6 को मार दिया । हमने आतंकवादियों को खदेड़ दिया। उनका इरादा हमारा असला और बारूद ले जाना था पर हमने यह नहीं ले जाने दिया । पर मैं और हम तीन (वही उपस्थित साथियों की तरफ इशारा करते हुए) इस कार्यवाही में शहीद हो गए।

यमराज — आप के परिवार में कौन —कौन है शहीद सिंह

शहीद सिंह— महाराज मेरी बूढ़ी अन्धी माँ है। एक 16—17 साल की बहन। बूढ़ा बाप , बीबी और एक बच्चा।

तीसरा शहीद — महाराज मैं कष्मीर राज्य के हिंदवाडा में तैनात था। जिस समय एक सैक्शन गश्त के लिए जा रही थी उग्रवादियों द्वारा हमारी गाड़ी के नीचे बारूद लगाकर हमला किया गया जिससे गाड़ी हवा में उड़ गयी और उसमें बैठे सभी जवान शहीद हो गए।

यमराज— हाँ तुम कहाँ शहीद हुए

(यह सुनते ही सभी शहीद हँसने लगते हैं। यमराज सबकी तरफ देखते हैं तो सब डर से चुप हो जाते हैं)

यमराज— क्यों हँस रहे हो तुम उसे अपनी दास्तां कहने दो।

कायर सिंह— महाराज मेरी बीबी अक्सर मेरी माँ से झगड़ती थी। बाप भी बीमार था। कोई भाई, बहिन उसकी देखभाल नहीं करते थे। मैं घर से एक हजार किलोमीटर दूर छत्तीसगढ़ में तैनात था। घर से माँ का पत्र आया जिसमें लिखा था कि आपकी पत्नी आये दिन झगड़ा करती रहती है जिससे हमारा जीना दुभर हो गया है। मैंने पत्नी को समझाने की कोषिष की किन्तु उस पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

यमराज— अरे संसार तो दुख से भरा है तुम यह बताओ तुम कैसे मरे हो।

कायर सिंह रोज—रोज की घर की घटना से मैं दुखी हो गया था डियटी भी कठिन थी और मैं अक्सर बीमार ओर परेषान रहता था अतः मैंने आत्महत्या करने का निर्णय लिया। मुझे किसी ने नहीं मारा। मैं स्वयं मरा हूँ।

यमराज— चित्रगुप्त, हमने आपसे शहीदों को बुलाने को कहा था। यह कायर सिंह तो वास्तव में कायर है।

चित्रगुप्त— जी महाराज गलती हो गई।

यमराज— सभी शहीदों का विषेय ख्याल रखा जाए। मैं ब्रह्मदेव से सिफारिष करूँगा की इन सब शहीदों का जन्म उसी बहादुर परिवार में हो जिसके यह सदस्य थे और जिस परिवार सुख से यह वंचित रह गए उसे भोगकर पुनः स्वर्ग का आनन्द उठाए।

चित्रगुप्त जी महाराज। और इस कायर सिंह का क्या किया जाए।

(कायर सिंह बीच में ही— महाराज मुझे माफ़ कर दें। मुझे भी एक बार पुनः अपने परिवार में जाने दे मैं ऐसी गलती दुबारा नहीं करूँगा।)

यमराज— आप शान्त रहे। आप जैसे कायरो और जिम्मेदारियों से भागने वालों के लिए मेरे दिल में सहानुभूति नहीं है। चित्रगुप्त सुने

चित्रगुप्त — जी महाराज आदेश करें

यमराज— इस कायर सिंह को अगले आदेश तक नरक की सारे यातनाएं दी जाए। इसे सबेक सामने सौ कौड़े भी रोज मारे जाए।

चित्रगुप्त — जी महाराज।

कायर सिंह— महाराज मैं बहुत शर्मिंदा हूँ मुझे मार करे मैंने अपने देश और व्यवसाय का अपमान किया है मैंने अपने साथियों का और परिवार का भी अहित किया है। मैं। इसी योग्य हूँ महाराज मैं। इसी योग्य हूँ। मुझे पश्चाताप के लिए सजा भोगनी ही पड़ेगी।

यमराज— दरबान इसे ले जाए।

कायर सिंह— मैं। आप सब साथियों से भी मूर्ति मांगता हूँ। शहीदों में आप का दर्जा नहीं पा सकता मैं। तो वास्तव में बुजदिल हूँ। माफ़ करना दोस्तो माफ़ करना।

“ हे देशवासियों आप भी मुझे माफ़ कर दे। भारत माता की जय ”

_____XXX_____

आत्महत्या विषयक लघु-नाटिका
(गलत राहो के मुसाफिर)

पात्र-परिचय

- वेद प्रकाश — सीमा सुरक्षा बल का जवान (उम्र करीब 30 वर्ष)
उर्मिला — वेद प्रकाश की पत्नी (उम्र करीब 28 वर्ष)
मालिनी — वेद प्रकाश की पुत्री
राम प्रवेश — वेद प्रकाश के पिताजी
सुहासिनी देवी— शहीद की पत्नी
सतविंदर — वेद प्रकाश का मित्र
कालू सिंह — वेद प्रकाश का दबंग पड़ोसी
कमाण्डेंट / एडज्यूटेंट— सी.सु.बल के अधिकारी
उद्घोषक
सूत्रधार

(अंक प्रथम दृश्य प्रथम)

‘पर्दा उठता है, नेपथ्य से आवाज आती है शहीदों के चिताओं पे , लगेंगे हर बरस मेले, वतन पे मरने वालों का यही बाकी निषां होगा ’

रंग मंच पर एक स्कूली दृश्य – चार-पाँच शिक्षक कुर्सियों पर बैठे हुए, कुछ छात्र-छात्राएं नीचे बैठी हैं, कौने में माइक पर (उद्घोषक)

उद्घोषक –देवियों व सज्जनों, हमारे लिए ये दुःख का विषय है कि विगत माह कल्याणपुर गाँव के श्री विमलेश कुमार हमसे सदा-सदा के लिए बिछड़ गए परन्तु गर्व की बात यह है कि मातृभूमि के इस वीर सपूत ने सीमाओं की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर किये। इस विद्यालय की उत्कृष्ट परम्परा के अनुसार विद्यालय प्रबन्धन ये घोषणा करता है कि आज से शहीद श्री विमलेश कुमार के पुत्र एवं पुत्री को, जो इसी विद्यालय के छात्र हैं की शिक्षा-दीक्षा का उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लेता है।

अब मैं आग्रह करूँगा प्राचार्य महोदय से कि वे शहीद विमलेश की धर्मपत्नी श्रीमती सुहासिनी देवी को सम्मानित करके विद्यालय को गौरवान्वित करें— श्रीमति सुहासिनी देवी..... प्राचार्य महोदय।

(प्राचार्य एवं सुहासिनी देवी अपनी-अपनी कुर्सी से उठते हुए स्टेज के मध्य आते हैं। कौने में एक चपरासी ट्रे में शाल व बन्द लिफाफा लेकर प्राचार्य महोदय के पास आता है। श्रीमती सुहासिनी देवी को शाल ओढ़ाकर व लिफाफा प्रदान कर, प्रार्चा करतल ध्वनि करते हैं)

उद्घोषक:— शहीद विमलेश

छात्र-छात्राएं : अमर रहे..... अमर रहे

(शहीद विमलेष के जयकारे लगाए जाते हैं)

(पर्दा गिरता है)

(दृष्य द्वितीय)

(पर्दा उठता है... एक कमरे का दृष्य रंगमंच के कोने में कुर्सी, टेबल रखी हुई है। दूसरी तरफ दो कुर्सी और एक टेबल पड़ी है। पहली कुर्सी पर बैठी उर्मिला किताब पढ़ रही है। कमरे में मालिनी का प्रवेश.... इस तरह से कि उर्मिला उसे देख नहीं पाती है। मालिनी अपना स्कूल बैग टेबल पर जोर से पटकती है और जोर से माँ-माँ की आवाज लगती है)

उर्मिला— आ रही हूँ बेटी। आ रही हूँ।

(उर्मिला किताब रखकर मालिनी के पास जाती है) (बोलती है)

उर्मिला :- बेटी! आ गई स्कूल से, जा जल्दी से हाथ मुँह थोले, मैंने तेरे लिए तेरी पसंद का साम्भर बड़ा बनाई हूँ।

मालिनी ‘— (तुनकती हुई)। मुझे नहीं खाना कोई बड़ा-सड़ा... मुझे पहले तुमसे कुछ पूछना है।

उर्मिला:— अरी...पूछती रहना पुरा समय पड़ा है पुरी रात पड़ी है आखिर इस घर में मेरे और मेरे सिवा है कौन ?

मालिनी:— मुझे बहकाने की कोषिष मत करो माँ— मुझे अपने सवालों का जवाब चाहिए!

उर्मिला :- (माथा ढोकती हुई) ओपफोह— ये लड़की थी बिल्कुल अपने बाप पे गई है। (लम्बी साँस लेती हुई) दूसरी कुर्सी पर बैठ जाती है)

उर्मिला :- पूछो क्या पूछा है ?

मालिनी :- (आकर बगल में बैठ जाती है) माँ सच बताना मेरी कसम

उर्मिला :- अरे ओल भी

मालिनी :- (माँ का हाथ पकड़कर अपने सिर पर ले जाती है) नहीं पहले कसम खाओ

(उर्मिला मालिनी के सिर पर हाथ रखकर खींच लेती है)

उर्मिला :- (चल खाली कसम.... अब पूछ क्या पूछना चाहती है

मालिनी :- (संजीदगी से) माँ... क्या पापा सचमुच में शहीद हुए थे ? (प्रश्न सुनकर उर्मिला के चेहरे का रंग सफेद पड़ जाता है, कुछ नहीं बोलती है, मुँह फेरकर दूसरी तरफ खड़ी हो जाती है)

मालिनी :- (जबरदस्ती माँ को पकड़ अपनी तरफ मुँह करती हुई..) माँ बोलती क्यों नहीं?

उर्मिला :- (झटके से हाथ छोड़ाकर — रंगमंच पर आगे की तरफ आती है और फिर मालिनी के पास जाती है। सर झुकाकर कहती है) (गंभीर स्वर में) तेरे सवाल का जवाब तो मैं बाद में दूंगी पहले तू बता कि तू ऐसा पूछ क्यों रही है?

मालिनी:- मम्मा! टापतो रोने लगी, दरअसल बात ऐसी है कि हमारे स्कूल में शहीदों के बच्चों का निःशुल्क पढ़ाई की व्यवस्था है। जबकि हम तो फीस देते हैं। फिर भी— आई एम सॉरी मम्मा। अगर मेरी बातों से आपको तकलीफ हुई हो तो...

उर्मिला :- (रोती हुई) नहीं बेटे। आजतक जिस राज को मैं अपने सीने में दफ़न किए हुई थी आज उस कड़वे सच को तुम्हें कसम उठाने पर बयां कर रही हूँ... तुम्हारे पापा शहीद नहीं हुए थे, मेरी तो आदत बन गई है तकलीफ़ा को झेलने की पर तुझे कोई तकलीफ़ ना हो इसलिए मैं तुझसे सच छुपाती रही लेकिन आज बता रही हूँ सुनले (चिल्लाकर)— हाँ तेरा बाप शहीद नहीं हुआ था, उसने सरहदों पर प्राण जरूर न्यौछावर किये थे परन्तु मातृभूमि के राहों में नहीं बेटा.... गलत राहों में.... और वो राह थी.... आत्महत्या की राह) (सच्चाई सुनकर मालिनी हतप्रत रह जाती है। माँ— बेटी दोनो रोने लगती है)

(पर्दा गिरता है)

दृश्य तृतीय

(एक सजे—धजे कमरे का दृश्य ,कमरे में एक पलंग दो चार कुर्सियां ड्रेसिंग टेबल इत्यादि है, उर्मिला टेबल पर बैठी कंघी कर रही है)

वेद प्रकाश—: (जूते का फीता बाँधते हुए) उर्मिला शहर जा रही हूँ, कुछ चाहिए तो बोला!

उर्मिला —: तुम फौजियों की यही तो आदत बहुत बुरी लगती है, घर की बातें बहुत जल्दी भूलते हो, पर दांये मुड़— बाये मुड़ पूरी जिंदगी याद रहती है!

वेद प्रकाश—: (मनुहार करता हुआ)— अरे भाई भूला नहीं याद है, नया सूट लाने को न बिग बाजार से , हाँ सब याद है और कुछ चाहिए तो बोलो।

उर्मिला—: (नजदीक आकर) और कुछ भी नहीं सजन..... बस घर जल्दी आना।

(वेद प्रकाश से जाने को मुड़ने लगता है तभी पिता रामप्रवेश की आवाज नेपथ्य से)

राम प्रवेश—: अरे बेटा शहर जा रहे हो!

वेद प्रकाश —: हाँ बाबूजी— कोई काम है

राम प्रवेश—: बेटा जरा कचहरी चले जइयों , वो रजिस्ट्री के जो कागजत है उसकी नकल लेते अइयो...।

वेदप्रकाश—: जी बाबूजी।

(पर्दा गिरता है)

(दृष्य —चतुर्थ)

(खेती का दृष्य , राम प्रवेश धोती—कुर्ता पहने हुए गम बाँधकर खेतों की तरफ घूमते हुए तभी चार—पाँच व्यक्ति हाथों में लाठी लिए हुए रंगमंच पर प्रवेश करते हैं)

कालू सिंह—: अरे उठो रामप्रवेश! तेरे को कितनी बार मना किया हकि तु इस खेत पर नजरें गड़ाना छोड़ दे, लेकिन फिर भी तु जब देखे इधर ही मुँह मारता है, अरे बूढ़े ! दिमाग तो नहीं फिर गया तुम्हारा.....

रामप्रवेश—: ना भाई कालू कैसे नजरें फिराना छोड़ छूँ? आखिर अपनी जमीन से भी कोई नजरे चुराता है ।

कालू सिंह—: त्यो कलो बातें इनसे— (राम प्रवेश के छाती पर हाथ मारते हुए)
बता ये जमीन कब से तेरी हो गई!

रामप्रवेश—: कालू भाई मेरी बात मानो, अभी परसों ही तो वेद प्रकाश ने जमीन की रजिस्ट्री करवाई है और आज इसकी नकल लेने शहर गया हुआ है।

कालू सिंह— (आग बबूला हो जाता है और जोर का धक्का करते हुए रामप्रवेश को गिरा देता है) तुम्हारी ये औकात.....” जल में रहते हुए मगर से बैर ” देखूँगा तेरे को भी और मेरे फौजी बेटे को भी, साले.... (दो थप्पड़ लगाता है)

रामप्रवेश—: भाई मार क्यों रहे हो. गाली क्यों दे रहे हो? आ लेने दो मेरे फौजी बेटे को!

कालू सिंह—: अरे चुप्प बुडढ़े , होगा तेरा बेटा फौजी या कर्नल पर यहाँ पर तो कर्नल और जनरल हम ही है।

(साथियों से कालू सिंह कहता है कि तोड़ दो इस बुडढ़े की हड्डी—पसली कालू सिंह के गुगे लात—घूँसो से मारने लगते है— राम प्रवेश बचाओ—बचाओ चिल्लाता है)

(पर्दा धीरे —धीरे गिरता है)

(दृष्य —पंचम)

(वेद प्रकाश के घर का दृष्य: वेद प्रकाश यूनिट में जाने की तैयारी कर रहा है उर्मिला उसका सामान पैक कर रही है)

वेद प्रकाश— दुनिया भी अजीब है उर्मिला.... पूरे साल सीमाओं पे ड्यूटी करते रहो, फिर घर आओ तो पड़ोसी चैन से बैठने नहीं देते, पैसा अपना, जमीन उनकी, उपर से बुजुर्गों के साथ मार—पीट अलग केस की फाइल, दबंगों के जोर से धूल फाँक रही है कभी—कभी तो जी में आता है कि उठाउ बन्दूक और भून डालू सालो को पर नौकरी और तुम लोगो की सलामती का ख्याल ऐसे कदम उठाने से रोक लेता है। फिर भी यूनिट में जाकर अपने अधिकारियों से मैं इस सिलसिले में मदद माँगूंगा। उम्मीद है कि वे मेरी मदद जरूर करेंगे।

उर्मिला— ठीक कह रहे हो आखिर तुम्हारी बात वे क्यों नहीं सुनेगे? (हँसते हुए) पूरी जवानी तो उन्हीं को देते हो, मेरे हिस्से में तो उनका छोड़ा हुआ हिस्सा ही आता है। (नजदीक आकर प्यार से अपनी अँगुली से वेदप्रकाश की टुढ़की उठाती हुई) एक बात कहूँ — बुरा तो नहीं मानोंगे...

वेदप्रकाश— बोलो

उर्मिला— वो ऐसा है कि मेरे दूर के रिश्ते का भाई पुलिस में बड़ा ऑफिसर है और यही बगल के जिले में तैनात है आप कहे तो उनकी मदद से कालू सिंह की लगाम करवाऊँ और दरोगा की भी थोड़ी खिचाई करवाऊँ।

वेद प्रकाश —अरे वाह! “ नेकी और पूछ-पूछ ” लेकिन कहीं भैया को वो न बना लेना!

उर्मिला— धन्तेरे की (षर्माती हुई) आप भी कितनी गंदी गातें करते हो। (षरमा कर भाग जाती है— वेदप्रकाश उसे जाते हुए देखते रहता है। बैग उठाकर चल देता है)

(पर्दा गिरता है)

(दृष्य —शषष्टम)

(यूनिट का दृष्य — वेद प्रकाश अपने आठ-दस अन्य कार्मिकों के साथ जीरो लाइन परेड पर खड़ा है। कमांडेंट महोदय जवानों का इंटरव्यू लेत हुए वेदप्रकाश के पास आते हैं— वेद सैल्यूट देता है और रिपोर्टिंग करता है)

वेदप्रकाश— जय हिंद श्रीमान्मै। नं.— 040035124 आरक्षक वेदप्रकाश 'सी' कम्पनी जिला मेरह उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ। महोदय मैं 60 दिनों के अर्जित अवकाश पर घर गया था और छुट्टी काटने के पश्चात् सही समय पर वाहिनी में उपस्थित हुआ हूँ।

कमांडेंट— वेरी गुड। छुट्टी कैसी रही। घर पर कोई परेशानी तो नहीं

वेदप्रकाश— सर परेशानी तो है छोटी नहीं, बहुत बड़ी पर इसके लिए मैं। आपसे अकेले मिलना चाहता हूँ।

कमांडेंट— आ.के.— आपको जो भी परेशानी है वो एप्लीकेशन में लिखकर एडज्यूटेंट साहब को दे दीजिए। आपकी समस्या अवश्य सुनी जाएगी।

वेदप्रकाश— थैंक्यु सर— जय हिन्द...

(कमाण्डेंट वेदप्रकाश का इंटरव्यू लेते ही एडजूटेंट पुरी पार्टी को सावधान करते हैं।)

एडजूटेंट— जीरो लाइन परेड सावधान... लाईन तोड़(सभी लाइन तोड़ते हैं)

(पर्दा गिरता है)

(दृष्य –सप्तम)

(उर्मिला गाँव से आ रही है। चौपाल पर कालू सिंह और उसके 2-4 गुर्गे बैठे हुए हैं। उर्मिला के आते देख कालू सिंह उसका रास्ता रोककर खड़ा हो जाता है

कालू सिंह— (उर्मिला से)— अचानक चवीढियों के भी पंख निकलने लगे हैं। जनम कहाँ— कई थी ?

उर्मिला (रास्ता काटकर आगे निकलने की कोषिष करती हुई) कही भी... छोड़ मेरा रास्ता।

कालू सिंह— तुम क्या समझती हो कि जो तुम कर रही हो उसके बारे में हमें नहीं पता। सुना है आजकल किसी पुलिसिए से यारी गॉठ रखी है।

उर्मिला— खींच लूगी तेरी गंदी जवान , समझता क्या है अपने आपको । एक उम्रदराज पर हाथ उठाकर अपने आपको तीसमार खों समझता है यारी होगी तेरी माँ— बहन की..... कमीने(गुस्से में तुनकती हुई आगे बढ़ जाती है)

कालू सिंह— (पीछे से) ये तो हम थोड़े ही कह रहे हैं। पूरे गाँव में तेरी आषिकी के चर्चे हैं खेर देखते हैं। चिड़िया का पर करना हतें भी आता है।

(कालू सिंह के सब गुर्गे सहित कालू सिंह अट्टाहास करते हैं)

(पर्दा गिरता है)

(यवनिका पतन))

(दृष्य –अष्टम)

(उर्मिला का घर— बाहर चारपाई पर वेदप्रकाश के पिताजी रामप्रवेश हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं। उर्मिला घर के अन्दर जाने लगती है)

रामप्रवेश— (उर्मिला को आवाज देते हुए)बहु जरा सुनना...

उर्मिला—(घँघट निकालकर) जी बाबूजी

राम प्रवेश— क्या हुआ का का ?

उर्मिला— बाबूजी, भैया कह रहे थे कि केस के सिलसिले में उपर से पैरवी कर दी गई है। दो चार दिनों में सारे धरे जाएंगे।

रामप्रवेश— बहू कैसे कहूं मेरे मुंह से ये बातें अच्छी नहीं लगती। घर में जवान बेटा ना हो और उसकी लुगाई बाहर घूमे तो लोग तरह-2 की बातें बनाते हैं। गाँव में निकलना मुश्किल हो जाता है। उसमें बुजुर्गों के लिए.....

उर्मिला— बाबू जी ये आप क्या कह रहे हैं क्या लोगो के डर से हम अपनी जमीन खो दें और ताने सहते रहे उस कालू सिंह के।

राम प्रवेश— हाँ बहुत हमारा यही फैसला है कि अब तुम कहीं बाहर नहीं जाओंगी वेदप्रकाश से मेरी बात हुई है उसका भी यही फैसला है। केस को वो देख लेगा।

उर्मिला— बाबू जी अब अन्तिम क्षणों में मैं अपने कदम वापस नहीं ले सकती (कहकर पैर पटकते हुए अन्दर चली जाती है)

रामप्रवेश— ठीक है बताता हूँ वेदप्रकाश को तुम्हारी हरकतों के बारे में (बगल में रखा मोबाइल से नम्बर डायल करता है)

(पर्दा गिरता है)

(दृश्य –नवम्)

(कमरे में उर्मिला सोई है। फोन आता है)

उर्मिला— हैलो...

वेदप्रकाश— हॉ कैसी हो ?

उर्मिला— ठीक हूँ आप अपनी सुनावे

वेदप्रकाश— ठीक ही हूँ— हैलो.... (वेदप्रकाश फोन पर कुछ कहता है)

उर्मिला— आप मुझसे ऐसा कह रहे हैं यहाँ मुझे केले को छोड़कर आप करते हो सीमाओं की निगरानी मैं झेलती हूँ सारी परेशानी , और आप दुखों को दूर करने के लिए किसी अपने के पास जाने से क्या औरत पथभ्रष्ट हो जाती है

वेदप्रकाश— (साइलेंट)

उर्मिला— अगर आपको मेरा बाहर आना जाना बुरा लग रहा हो तो आ जाओ और कर लो हिसाब कालू सिंह से बराबर... अरे आज तो उसने आपकी जमीन छीनी है कल वो मुझे भी ले जाएगा और आप बजाते रहना अपनी ड्यूटी।

वेदप्रकाश— (साइलेंट)

उर्मिला— (रोती हुई) हॉ मैं हूँ कुल्लूनी, पथभ्रष्ट... पर एक बात कान खोलकर सुनलो— कि आज के बाद मुझसे बात तभी करना जब कालू सिंह से अपना हिसाब कराबर कर लेना

(गुस्से में फोन काट देती है)

(पर्दा गिरता है)

(दृष्य –दसवाँ)

(रात का समय— सतविंदर और वेदप्रकाश ए.सी.पी. पर तैनात है)

सतविंदर— यार वेद तू कुछ उदास सा लग रहा है।

वेद प्रकाश— हॉ यार बात ही कुछ ऐसी है

सतविंदर— वही घर वाली बात, अरे यार इसके लिए तुम क्यों टेंशन में हो सी ओ साहब ने एसीपी को चिट्ठी लिखी है और उस पर भी कार्यवाही नहीं हुई तो डी. जी. साहब को आईपीपी के माध्यम से कम्प्लेन कर तेरी बात अवश्य सुनी जाएगी। इमें टेंशन की यार!

वेदप्रकाश— यार सतविंदर तु मेरा दर्द क्या समझेगा, अपना हाल मैं। खुद जानता हूँ (कहकर दूसरी तरफ टहलने लगता है)

सतविंदर— यार तू इदा कर कल हेडक्वार्टर चला जा वहाँ तू सी ओ साहब नु पेश होके छुट्टी चले जा।

वेदप्रकाश — देखता हूँ (दोनों टहल-2 कर ड्यूटी करने लगते हैं)

(पर्दा गिरता है)

(दृष्य –ग्यारहवाँ)

(वेद प्रकाश वाहिनी मुख्यालय पहुँचता है और एडजुटेंट से इंटरव्यू लेता है)

एडजूटेंट— ठीक है वेद प्रकाश आपके एप्लीकेशन में लिखी आपकी समस्या को देखते हुए सी ओ साहब ने आपके एस पी को डी ओ लेटर लिखा है जवाब भी आया है कि कार्यवाही हो रही है परन्तु ये सब सरकारी कार्यवाइयाँ है इसमें थोड़ा वक्त तो लगता ही है। धीरज रखो आपकी समस्या दूर की जाएगी।

वेदप्रकाश — सर कब तक धीरज रखे दो माह हो गए कोई सुनता नहीं घरवाली दर-दर भटक रही है लोग ताने और मारते है।

सर मुझे अभी छुट्टी दे दे।

एडजूटेंट— नो प्राब्लम— कल सी.ओ साहब आएंगे आपको छुट्टी मिल जाएगी

वेद प्रकाश— थैंक्यु सर जय हिन्द

(दृष्य परिवर्तन)

(रात्रि का समय, वेदप्रकाश नाइट ड्यूटी पर है। घर पर फोन करता है)

उर्मिला— हैलो....

वेदप्रकाश—थोड़ा बाबूजी से बात करना है

उर्मिला — क्या बात है?

वेदप्रकाश— बोला न बाबू जी को फोन दो...

उर्मिला— अभी बाबूजी से बात नहीं हो सकती

वेदप्रकाश— क्यों क्या बाबूजी कहीं बाहर है.

उर्मिला— बाबूजी नहीं मैं बाहर हूँ

वेदप्रकाश— बाहर हो कहा ?

उर्मिला— भैया के यहाँ

वेदप्रकाश— भैया के यहाँ (आश्चर्य करता है) मेरे समझाने का तुम पर कोई असर नहीं बाबूजी ठीक ही कहते है।

उर्मिला — तुम्हारी बातों पर मुझे रती भर भी भरोसा नहीं, तुम्हारी जिंदगी तुम्ही को मुबारक, मैं अब भैया के पास से तभी जाऊँगी जब कालू सिंह अन्दर हो जाएगा।

वेदप्रकाश— उर्मि मैं कल छुट्टी आ रहा हूँ

उर्मिला— जब आ जाना, फोन कर देना घर आ जाऊँगी। ओके बाय...

(वेद प्रकाश एक्सचेंज का फोन मिलाता है), जय हिन्द सर... मै। कांस्टेबल वेदप्रकाश बोल रहा हूँ

एडजुटेंट— हॉ वेद बोलो...

वेदप्रकाश— सर मुझे छुट्टी चाहिए

एडजुटेंट— बोला तो सुबह चले जाना छुट्टी

वेदप्रकाश — नहीं सरा, मुझे अभी छुट्टी चाहिए

एडजुटेंट— वेदप्रकाश तुम पागल तो नहीं हो गये हो, इस वक्त कहाँ से लीव पास वगैरह बन पाएगा, रात काटो कल अर्ली मॉर्निंग छुट्टी निकल जाना

वेदप्रकाश— ठीक है सर जैसी आपकी मर्जी (फोन काट देता है)

एडजुटेंट— बी०एच०एम० वेद प्रकाश कहाँ है।

बी०एच०एम०— सर कैंटीन ड्यूटी में है

एडजुटेंट— बीएचएम तुरन्त उसके पास जाओ मैं भी पहुँच रहा हूँ। (इसी दौरान वेदप्रकाश अपने रायफल को अपने गरदन में सटाकर ट्रिगर दबा देता है और आत्महत्या कर लेता है

(दृष्य वापसी)

(वेद प्रकाश के कमरे में मालिनी— मालिनी सिर झुकाए बैठी है)

उर्मिला— बेटा ये थी तुम्हारे पापा की कहानी

मालिनी— (अफसोस प्रकट करती है) ओह पापा... आपने ये क्या किया सच्चाई जानकर अब मेरा सर शर्म से झुक गया पहले मैं घर से बाहर निकलती थी तो गर्व होता था कि मैं एक शहीद की बेटी हूँ पर आज के बाद मेरे लिए तो घर से बाहर निकलना भी मुश्किल होगा , क्योंकि लोग कहेंगे कि वो देखों एक कायर की एक गत राहों के मुसाफिर की बेटी जा रही है। ओप्फो.... पापा आपने गलत किया, सरासर गलत किया। (कहकर रौने लगती है रंगमंच पर धीरे—2 पूर्ण अन्धेरा छा जाता है)

(नेपथ्य से सूत्रधार की आवाज)

जिंदगी बड़ी नाजुक और फिसलन भरी होती है एक गलत कदम जीवन पर कलंक लगा देता है। इसे संभलकर जीना चाहिए। आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं। आत्महत्या तत्कालीन पागलपन होता है सैनिक का जीवन तो चौराहे के समान है यहाँ एक नहीं अनेक रास्ते निकलते हैं एक द्वार बन्द होगा तो क्या दूसरा द्वार खुल जाएगा। आत्महत्या वीरता नहीं कायरता का घोटक है।

जैसा कि आपने इस लघु नाटिका में देखा— वेद प्रकाष की समस्या कोई इतनी बड़ी नहीं थी जिसकी वजह से उसे आत्महत्या जैसा आत्मघाती कदम उठाना पडा। पडोसियो के झगडे, आपसी कलह, अफवाहे और कुछ सरकारी औपचारिकताए ऐसी होती है जिनसे आए दिन तकरीबन हम सबको दो चार होना ही पडता है। क्योंकि संघर्ष ही जीवन है वेदप्रकाष अगर चाहता तो थोडा धीरज रखता , छुट्टी आता , अफवाहों को परखता और विभागीय सहयोग से अपनी जमीन पे कब्जा भी पाता, परन्तु उसके एक गलत कदम ने न सिर्फ एक हँसता खेलता परिवार उजाडा, अपितु सदा—सदा के लिए दे गया कभी ना मिटने वाला बदनामी का कलंक! बचे इससे क्योंकि इससे ना सिर्फ आप बल्कि आपकी जाति, समाज , आपकी संस्था और आपका देश सब कुछ बदनाम होता है। याद रखे— गीत राहां पे चलने वाले मुसाफिरो की मंजिले भी गलत होती है।

(समाप्त)

लेखक द्वारा

संख्या—920030330

आरक्षक

अमरेन्द्र सिंह

54 वी वाहिनी सीसुब

संलग्न— सनसम्पर्क अनुभाग

मों. 8510849917

संख्या— 921920003

मुख्य आरक्षक

जनार्दन यादव

24वी वाहिनी सीसुब

मों. 9968582278

____XXX____